मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

वर्ष - 18
Vol - XVIII
Issue No - additional issue
January- 2022 To March 2022

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 6.375

»aksharwartajournal@gmail.com »www.facebook.com/aksharwartawebpage »+918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

» सुनीति रावत के कविता संग्रह 'सुन मिताली' में व्यक्त कथ्य
डॉ. मलकीयत सिंह 06

» कांतिकुमार जैन के संस्मरणों में निहित प्रकृति चिंतन का विश्लेषण
आकांक्षा जैन, प्रो. चंदा बैन 10

» अभिज्ञान शाकुन्तलम् में सामाजिक अवदान
बीना सिंह, डॉ. श्याम नारायण सिंह 14

» भारत का समसामयिक कला परिदृश्य : छाया - प्रकाश चित्रण के विशेष संदर्भ में
प्रेषिका द्विवेदी 18

» परमानन्द सागर में सांस्कृतिक उत्सवधर्मिता के विविध रंग
डॉ.पार्वती शर्मा चाँदला 20

» समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना
डॉ. औम प्रकाश सैनी 23

» हास्य और व्यंग्य का मुकम्मल दस्तावेज : भोलाराम का जीव
डॉ. विवेक शंकर 27

» प्रेमचन्द्र के उपन्यासों में नारी संवेदना
योगेन्द्र प्रताप सिंह 30

» इतिहास एवं कला में अयोध्या का कनकभवन मन्दिर
डॉ. दिवाकर त्रिपाठी, संदीप मिश्र 34

» कृष्णभक्ति आन्दोलन एवं उसका प्रसार
डॉ. मीनाक्षी दत्ता 39

» "विश्व पटल पर हिन्दी के कदम"
अनीता देवी 42

» कमलेश्वर की कहानियों में टूटते जीवन मूल्य
डॉ. अचला पांडेय 44

» हिन्दी आदिवासी कहानियों में बदलते सामाजिक - सांस्कृतिक परिदृश्य
पूरन सिंह 47

» पर्यटन की अवधारणा
जगदीश कुमार 49

» किन्नरों की दशा एवं दिशा
डॉ. सुधा सिंह, निशा यादव 55

» अदम गोंडवी : संघर्ष और सृजन
डॉ. सुभाषचन्द्र गुप्त 58

» राहुल सांकृत्यायन के यात्रा साहित्य में प्रतिबिम्बित सांस्कृतिक परिस्थिति
लिट्टी योहन्नान 64

» पूर्वोत्तर भारत में अरूणाचल प्रदेश की आदी जनजाति के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का स्वरूप
यांकी तागू 66

» भारतीय परिवार व्यवस्था में स्त्रियों का स्वरूप
सुमन यादव 68

» 'माधवी' नाटक में अभिव्यक्त नारी अस्मिता
डॉ. रमेश कुमार 70

» मुर्दहिया में चित्रित लोक जीवन की झाँकियाँ
नन्दराम 72

» बदलता वैश्विक परिदृश्य और सुरक्षा परिषद् में भारत की दावेदारी
डॉ. रत्नेश कुमार मिश्र 75

» मैदान से सिनेमा के पर्दे तक
डॉ. मीना 78

» "आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री अस्मिता के स्वर"
शहजादी खातून 80

» "रेणु की कहानियों में मानवीय संवेदना"
डॉ. (श्रीमती) दमयन्ती तिवारी 83

» "पंचायती राज में जनप्रतिनिधियों की राजनीतिक सहभागिता एवं जागरूकता : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन"
डॉ. (श्रीमती) मीनाक्षी सौभरि 87

» तुलसी के आदर्श रामराज्य की समकालीन प्रासंगिकता
श्रीमती पार्वती रस्तोगी 92

» 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' में किन्नरों के अस्तित्व की तलाश
अस्मिता भगवान पाटील 95

» वैदिककालीन कृषि का अवलोकन
डॉ. अनिल कुमार यादव 98

» जल संरक्षण और शिक्षा
डॉ. शफायत अहमद 100

» भारतेन्दु युग में गद्य साहित्य का विकास : संदर्भ और परिप्रेक्ष्य
डॉ. राकेश उपाध्याय 104

» 'विशेष कानूनों के बावजूद दलितों के खिलाफ बढ़ते अपराध'
डॉ. दयाशंकर सिंह यादव 107

» समकालीन विमर्श के आईने में हिंदी साहित्य
डॉ. पायल लिल्हारे 110

» कामकाजी महिलाओं की समस्याएं : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ. विमलेश यादव, अमरेश वती 114

» आत्मकथा 'जूठन' में दलित विमर्श का निरूपण
राज मणि सरोज 118

» महाकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में नारी के अधिकार एवं कर्तव्य
डॉ. टीना राव 122

Scanned with OKEN Scanner

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 6.375
Vol - XVIII, additional Issue (January 2022 to March 2022)
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHAR WARTA" Monthly International Refereed Journal

अदम गोंडवी : संघर्ष और सृजन

डॉ. सुभाषचन्द्र गुप्त

हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, साकची, जमशेदपुर, झारखण्ड

गुजरी 20वी सदी के सांतवे दशक में ग़ज़ल के परिसर में उपस्थिति दर्ज करानेवाले रामनाथ सिंह उर्फ अदम गोंडवी का जन्म 22 अक्टूबर 1947 को उत्तरप्रदेश के गोन्डा जिलान्तर्गत आटा परसपुर गाँव में हुआ था और उनकी मृत्यु 18 दिसम्बर 2011 को हुई। उन्होंने ग़ज़ल का एक आत्मसजग समाजशास्त्र विकसित किया और इस प्रक्रिया में न केवल ग़ज़ल को बन-बनाएँ ढ़ाँचें से बाहर निकालकर वस्तुपरक एवं जीवनधर्मी मुहावरा दिया, बल्कि संघर्ष के नये-नये इलाकों की खोज कर ग़ज़लों का संदर्भ बनाया। अदम गोंडवी का संघर्ष जितना वस्तुजगत से है, उतना ही अन्तर्जगत में उठनेवाले प्रश्नों, संशयों और द्वन्द्वों से है। इसीलिए वे गहरी और बहुस्तरीय तोड़-फोड़ करते दिखायी देते हैं-ग़ज़ल की सृजनात्मक दृष्टि में, भाषा-विधान में, बिम्ब-विधान में। उन्होंने ग़ज़ल को रोमानी सौंदर्यबोध से अलगकर अपने को दुष्यंत की धारा से जोड़ते हुए हिन्दी ग़ज़ल को जनवादी चेतना से लैस करने का खतरा उठाया। यह खतरा मानवीय प्रश्नाकुलाहट और जिजीविशा से संपन्न ग़ज़लकार ही उठा सकता है। गहरी सामाजिक और राजनीतिक समझ ने उनकी ग़ज़लों को ऐसी ऊष्मा दी है जो न केवल कलावादी रचनाशीलता को खारिज करती है, बल्कि जीवनगत व समाजगत विसंगतियों तथा विरोधाभासों के खिलाफसंघर्ष की एक हथियार बन जाती है। वे यथास्थिति रचना को सुलानेवाली रचना मानते हैं और इस तरह की रचना को गंदी व अश्लील कहकर तीखी आलोचना करते हैं-

''जल रहा है देश यह, बहला रही है कौम को।
किस तरह अश्लील है, कविता की भाषा देखिए।।''

एक मध्यवर्गीय किसान-परिवार में जन्में अदम गोंडवी को हर स्तर पर संघर्ष करना पड़ा। पारिवारिक स्तर पर अभावों व दबावों का विरासत उन्हें मिला तो सामाजिक स्तर पर, रूढ़िवादी मानसिकताओं तथा सामंती शक्ति-संरचना वाला परिवेश मिला। लिहाजा दोनों स्तरों पर उन्हें संघर्ष का रास्ता चुनना पड़ा जो उनके लिए एक मात्र विकल्प था। दुनिया, कलाकार को कला-जीवन जीने कहाँ देवी, अदम गोंडवी की ग़ज़लों से गुजरें तो यह अहसास बार-बार होता है कि मानो हम रणक्षेत्र में युद्धरत किसी योद्धा को देख रहे हैं। वैसे उदारीकरण के दौर में हिन्दी-साहित्य के परिदृश्य में नकली योद्धाओं की एक बड़ी जमात पैदा हुई है जो प्रायोजित प्रसिद्धि और समृद्धि के आरामगाह में बैठकर कविता गढ़ती है। कविता गढ़नेवाले इन कवियों के हाथों में तलवारें तो हैं, पर उनकी तलवारों पर धार नहीं है। धार हो भी नहीं सकती क्योंकि संघर्ष की तलवारें तो विचारों की धार से चमकती है। जीवन और रचना के फासले को ज्यादा देर तक छुपाकर रखना संभव नहीं होता। अदम गॉडवी गढ़नेवाले नहीं, जीकर रचनेवाले रचनाकार हैं। दो राय नहीं कि रामनाथ सिंह को अदम गोंडवी बनाने में उनके जीवन की जटिल परिस्थितियों और सामाजिक-राजनीतिक संवेदनशीलता की अहम भगीदारी रही। अपने आसपास मौजूद संवादहीनता-प्रश्नहीनता में जीने को अभिशप्त ग्रामीणजनों और मेहनतकश लोगों की त्रासद नियति को समझने के क्रम में अदम गोंडवी ने अपने-आपकों भी समझा और उनके भीतर आदमी होने की तमीज पैदा हुई। हिन्दी-साहित्य में कई ऐसी प्रतिभाएँ हुई हैं जिन्हें उनकी जीवन-परिस्थितियों ने किशोर से बूढ़ा बना दिया। जीवन की असमय जिम्मेदारियों ने उन्हें युवा बनने ही नहीं दिया। ऐसी प्रतिभाओं में मुक्तिबोध, धूमिल, राजकमल चौधरी, दुष्यंत, रमेश वक्षी आदि कई नाम उल्लेखनीय हैं और इसी श्रृंखला में अदम गोंडवी का भी नाम आता है। जीवन के जटिल हालातों ने उन्हें उम्र से पहले परिपक्व बना दिया। इसी परिपक्वता ने उछलने-कूदने और शोर मचाने की उम्र में उनके भीतर अपने प्रति, अपने परिवार के प्रति दायित्व-बोध पैदा किया। बचपन में ही माँ को खोने का दर्द उन्हें आजीवन सालता रहा। भीषण आर्थिक तंगी और अनेकानेक कठिनाइयों के कारण वे गाँव के ही सरकारी स्कूल से मात्र पाँचवीं कक्षा तक की शिक्षा पा सके। होश संभालते ही अदम गोंडवी ने अपने सामने रोटी का सवाल पाया। किसानी के अलावे और कोई इतर विकल्प उनके पास नहीं था क्योंकि नौकरी पाने के लिए न तो उनके पास उच्च शैक्षणिक डिग्री थी और न कोई टेक्नीकल प्रशिक्षण। लिहाजा उन्होंने जीने के लिए एक हाथ में कुदाल पड़ा और अपने जैसे मेहनतकश आदमी की चिन्ताओं को गूंगी-बहरी व अंधी व्यवस्था तक पहुँचाने और संगठित वैचारिक जागरण के लिए दूसरे हाथ में कलम-''इक हाथ में कलम है/और इक हाथ में कुदाल/बावस्ता है जमीन से/सपने अदीबे के।''

अदम मानते हैं कि किसानी और कविताई दोनों का अस्तित्व जनता और जमीन से जुड़ा है। किसान जनता को रोटी देता है और कवि चेतना पैदा करता है। किसान तन का पोशक है और कवि चेतना का पोशक। एक शरीर को ऊर्जा देता है और दूसरा मस्तिष्क को। दोनों का संतुलित विकास ही व्यक्ति-जीवन को गतिषील और दीर्घायु बनाता है। कथाकार रामवृक्ष बेनीपुरी ने वर्षों पूर्व एक महत्वपूर्ण निबंध लिखा था-'गेहूँ और गुलाब'। अदम गोंडवी के व्यक्तित्व में किसानी और कविताई दोनों की चेतना एक साथ दिखायी देती है। उन्होंने अपने समय और समाज को समझने के क्रम में इतिहास एवं वर्तमान दानों को प्रश्नात्मक उपकरण बनाते हुए भविष्य की ओर देखने की कोशिश की है। उनकी ग़ज़लों में सरलता है तो जटिलता भी थी क्योंकि उनकी ग़ज़लों में इतिहास, वर्तमान, भविष्य, समाज, राजनीति, अर्थनीति, मिथ्क-सब एक-दूसरे से टकराते दिखायी देते है। अदम किसी

Scanned with OKEN Scanner